इनके पाठ्यक्रम में हस्तकला, दर्जी के काम, जूता बनाने का के, बढ़ई का काम इत्यादि हो. जिससे बालकों में आत्मभाव एवं आत्मबल का भाव जागृत हो।

* विशेष कक्षा की व्यवस्था -

जब किसी कक्षा में एक ही प्रकार के बालक पाये जाते है तो उनका शैक्षिक निदान एवं उपचार बहुत ही आसानी से किया जाता है इसलिए अगर मंद बुद्धि बालक के लिए अलग से कक्षा की व्यवस्था होगी तो उन्हे उचित शिक्षा एवं प्रोत्साहन दिया जा सकेगा। जब किसी सामान्य कक्षा में विशिष्ट बालक बैठता है तो वह सामान्य बालकद्वारा हसी का पात्र बनाया जाता है जिससे उस बालक में कक्षा एवं शिक्षा के प्रति हिन भावना पनपने लगती है।

* अध्यापन विधि -

मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि मंद बुद्धि बालकों का शिक्षण विधि अगर सामान्य बालकों से भिन्न (व्याख्यान विधि) का दिया जाय तो वह उस कार्य को अच्छे से सीख सकते है जब बालक की बुद्धि मंद हो तो उसे हम व्याख्यान के द्वारा किसी चिज को नही सीखा सकते है इसलिए मंद बालकों को प्रदर्शन कौशल ~~एवं~~ द्वारा जब उस कौशल से सम्बंधित सभी वस्तुओं को कक्षा में दिखाया जाता है तो वे बालक अच्छे से सीख लेते है।

* आवासीय विद्यालय द्वारा —

हेवार्ड एवं ओरलेंसकी (1980) का मानना है कि जब मंद बुद्धि बालक को किसी आवासीय विद्यालय में शिक्षकों, अभिभावक की देखरेख में रहने से कक्षा के बाहर कुछ न कुछ सीखने का मौका मिलता रहता है। इसलिए ऐसे बालकों का शिक्षा व्यवस्था आवासीय विद्यालय में होना चाहिए।

* व्यवहार परिमार्जन द्वारा
* चिकित्सकीय व्यवस्था
* स्वस्थ आदत का निर्माण

JANUARY
17
Thursday
Wk 03 • 017-348

JAN - 2019	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

मानसिक मंदता के प्रकार

साधारण मानसिक मंदता	अल्पबल मानसिक मंदता	गंभीर मानसिक मंदता	गहन मानसिक मंदता
I.Q. (50-70)	Q.I. (35-50)	I.Q. (20-35)	I.Q. 20 से कम
Educable	Trainable	Dependent child	Life suport retarded child

पैनरोज ने (चार) प्रमुख मानसिक दुर्बलता बताई है।

1. मंगोलिज्म -

इनकी शारीरिक बनावट मंगोल जाति के लोगों से बहुत मिलती जुलती है इनकी बादाम जैसी आंखें, मोटी पलकें होंठ पतले होते हैं अधिकांश मंगोलियाई में बौद्धिक स्तर जड़ बुद्धि का होता है।

2. क्रिटिनिज्म
3. माइक्रो सिफैली
4. हाइड्रो सिफैली

मानसिक मंद बालक की शिक्षा एवं समायोजन -

मानसिक मंदता से ग्रसित बालक को शिक्षा की व्यवस्था एवं उचित प्रबंध से किया जाता है जिन बालकों के बुद्धिलब्धि 50-70 के बीच होती है उन्हे शिक्षित किया जा सकता है लेकिन जिनकी बुद्धिलब्धि 35-50 के बीच होती है उन्हे सिर्फ प्रशिक्षित किया जा सकता है और 35 से कम बुद्धिलब्धि वाले बालकों को किसी दूसरे व्यक्ति पर आश्रित रहना पड़ता है।

विशेष पाठ्यक्रम -

रिले एवं लेविस (1983) ने मन्द बुद्धि बालकों के लिए अलग से पाठ्यक्रम की सिफारिश की थी। उनका मानना था की इस प्रकार के बालकों का पाठ्यक्रम अधिक सरल एवं मनोरंजक हो, जिससे बालकों की अभिरुचि को विकसित करे तथा उनमें अधिक समायोजनशील बनाने के ख्याल से

2019

मानसिक रुप से मन्द बालक
Mentally Retareded children

मानसिक मंदता से तात्पर्य बुद्धि के कम विकास से होता है। मंदबुद्धि बालकों की बुद्धि लब्धि सामान्य बालको से कम होती है क्योंकि इनके मानसिक शक्तियों मे न्यूनता पायी जाती है जिससे इनके सोचने समझने, विचार करने की शक्ति कम होती है। सन् 1913 में मनोवैज्ञानिकों ने मन्द बुद्धि बालक एवं शैक्षिक पिछड़ेपन में अन्तर किया। मनोवैज्ञानिको ने मानसिक मंदता की कसौटी सिर्फ बुद्धि नही बल्कि बुद्धि तथा समायोजनशीलता दोनो ही माना है। जब किसी बालक की बुद्धि, बुद्धि के औसत स्तर से कम होती है तथा समायोजनशील व्यवहार करने की क्षमता भी कम होती है तो हम उस प्रकार के बालक को मानसिक रुप से मंदित बालक कहते है।

पोर्टियस के अनुसार –

'मानसिक पिछड़ा बालक वह है जिनमें स्थाई मंदता या सिमित मानसिकता पायी जाती है। यह बालक स्वयं अपना काम करने और अपनी सहायता के अयोग्य होते है।'

American Association of Mental Deficiency, AAMD-1973 के अनुसार मानसिक मंदता से तात्पर्य सार्थक रुप से न्यून औसत बुद्धि क्षमता जो समायोजनशील व्यवहार में कमी के साथ-साथ पाई जाती है तथा जिसकी अभिव्यक्ति विकासात्मक अवधि में होती है।

मन्द बुद्धि बालक की विशेषताएँ –

* इन बालकों का बुद्धि लब्धि 70 से कम होता है।
* ये बालक अधिक ध्यान केंद्रित नही कर पाते हैं।
* ये बालक विद्यालय में असफलता सिद्ध निराश हो जाते हैं।
* इन बालकों में आत्म विश्वास का अभाव पाया जाता है
* इन बालको की बौद्धिक क्षमता सामान्य से कम होती है।
* ये बालक संवेगात्मक एवं सामाजिक रुप से कुसमायोजित होते है
* दुसरो को मित्र बनाने की इच्छा अधिक होती है
* ऐसे बालकों में शिक्षा की तरफ से भाषा का कोई योगदान नहीं है